मीठडा मीठा रे

मीठडा मीठा रे, मूने वचनिएं का वाहो।
मीठा ते मुखना लऊं मीठडा, कां प्रीतडी करीने परा थाओ।।

सनेह सनमंधडो समझावीने, अंतराय आडी टाली।
हवे अधखिण विरह सही न सकूं, मारे न आवे अवसरियो वाली।।

हवे विलखूं छूं वाला विना हूँ तो प्रेम नी बांधी पिड़ाऊं।
कां अलगा आप ग्रहीने ऊभा, हूँ निस दिवस फड़कला खांऊं।।

हवे कहोने वालाजी केम करूं, केणी पेरे रेहेवाय।
एम करता इन्द्रावती ने मंदिर पधारया, मारे आनंद अंग न माय।।